मुद्रित पृष्ठों की संख्या : 12

MTT–042

सिंधी–हिंदी–सिंधी अनुवाद में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

(पी. जी. डी. एस. एच. एस. टी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2025

एम.टी.टी.–042 : सिंधी–हिंदी के विविध क्षेत्रों में अनुवाद

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *सभी प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक प्रश्न के अंक उसके सामने दिए गए हैं।*

---

1. वाणिज्यिक अनुवाद की भूमिका को स्पष्ट करते हुए इसके अनुवाद की चुनौतियों का वर्णन कीजिए। 20

अथवा

नाटक की सिंधी से हिंदी अनुवाद प्रक्रिया को विस्तार से स्पष्ट कीजिए।

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

2. निम्नलिखित सिंधी शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए : 5

(i) नंढो पथरु

(ii) चंबो

(iii) बिॿट

(iv) तलाउ

(v) छेरि

(vi) चिठी

(vii) मोटाइणु

(viii) मुल्ह

(ix) मास्तरु

(x) शकु

3. निम्नलिखित हिंदी शब्दों के सिंधी पर्याय लिखिए : 5

(i) अलसाना

(ii) कोट

(iii) चहेता

(iv) तिरपन

(v) धीमा

(vi) प्रबल

(vii) रटना

(viii) संग

(ix) माला

(x) बढ़ना

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

4. (क) निम्नलिखित कहावतों/मुहावरों का हिंदी अनुवाद करते हुए उनका सिंधी वाक्य में प्रयोग कीजिये : 10

(i) प्रेम में फासणु

(ii) वचन टोड़णु

(iii) गहरी दोस्ती

(iv) बगावत करणु

(v) आहे त ईद न त रोज़ो

(ख) निम्नलिखित कहावतों/मुहावरों का सिंधी अनुवाद करते हुए उनका हिंदी वाक्य में प्रयोग कीजिए : 10

(i) गया वक्त फिर हाथ आता नहीं

(ii) गड़े मुर्दे उखाड़ना

(iii) घाट–घाट का पानी पीना

(iv) चंग चढ़ाना

(v) एक पंथ दो काज

5. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** का हिंदी में अनुवाद कीजिए : 4×10=40

(i) तव्हां पंहिंजे दोस्त रमेश खे 'पंहिंजो जनमु डीं॒हुं कीअं मल्हायो' रिपोर्ट डीं॒दे ख़तु लिखो:

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

अजमेर

तारीख : 5 मार्च, 2023

प्यारा दोस्त रमेश,

मां तोखे मुंहिंजे जनम ड॒ींहं जी पार्टीअ में अचण लाइए नींड डि॒नी हुई पर तुंहिंजी माउ जी तबीयत ठीक न हुअण करे तू पार्टीअ में शामिल न थी सघिएं, जंहिंकरे मूंखे ड॒ाढो दुखु थियो। मुंहिंजो जनम ड॒ींहुं 2 मार्च, 2019 ते मल्हायो वियो। पार्टीअ में मनोरंजन ऐं रात जे खाधे जो बंदोबस्तु कयलु हो। मां सभिनी खां पहिरीं माउ–पीउ सां गडु॒ जनम ड॒ींहं जो केकु कटियो। पार्टीअ में असांजा सभु यार–दोस्त बि शामिल थिया ऐं असां मिली करे नाच संगीत बि कयो। सभिनी में केकु विरिहायो वियो ऐं असां सभिनी मिली करे केकु खाधो। रात जो 9 बजे असां सभिनी मिली करे भोज॒न कयो ऐं पोइ सभु पंहिंजे पंहिंजे घर विया। अहिड़ी तरह मुंहिंजे जनम ड॒ींहं जी पार्टी ड॒ाढे हर्षोल्लास सां मल्हाई वेई। तुंहिंजी यादि सभिनी दोस्तनि खे ड॒ाढी आई।

चाचीअ खे मुंहिंजी चरण–वंदना ऐं अनीता खे प्यारु।

तुंहिंजो दोस्तु

सुरेश

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

(ii) घर जे पुठयें अंङण में खाली जगह ते वण लगल हुआ. पीउ जे गुज़रण खां पोइ पुट उहे कटाइण शुरू कया. जडहिं बाकी हिकु वणु बचो तडहिं माउ चयुसि–

"पुट हिन वण खे रहणु डे. न कटाइ."

"छो अम्मां ?"

"ही वणु, तुंहिंजे पीउ पोखियो हो."

"हर कंहिं वण खे कोई न कोई त पोखींदो ई आहे अम्मां."

"मां हिन वण में तुंहिंजे पीउ नी आत्मा जो हुगाउ महसूस कंदी आहियां. मां जडहिं बि हिन जी छांव में विहंदी आहियां त मन खे राहत मिलंदी आहे, ऐं लगंदो आहे जणु मां हुनन जी संगति में स्नेह जी छत्र–छाया में वेठी आहियां."

ऐं पुटस उन्ही वण जे पासे मे हिकु बियो वणु पोखे छडियो.

(iii) अवाइली वहमनि, वीचारनि जा किरदार (देव, परिंयूं, जिन) जादूअ ऐं तिलस्मी करिश्मनि जा यादगार, इन्सानी गिरोह जा अदाकार बादशाह, राणियूं,

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

शहजादा–शहजादियूं, वज़ीर ऐं सौदागर ऐं ब॒िए तरफ़ उन्हनि कहाणियुनि जे तर–बर, ताञी–पेट में ईरा, हिंदी ऐं अरबी किस्सनि ऐं कहाणियुनि जा निशान मिलनि था।

शिकार करण लाइ जानवरनि पुठियां लग॒ुण, साथियुनि खां दूर निकिरी वञणु, रास्तो भुलिजी पवणु, रस्ते ते कष्ट–कषाला कढणु, कुदरती आफ़तुनि जो मुक़ाबिलो करणु, इहे सभु–ग॒ाल्हियूं इन्सान जे गूफ़ाई ऐं ख़ाना बदोश ऐं शिकार वारी ज़िंदगीअ तरफ़ इशारो कनि थियूं। शिकार जो वाकिओ लोक कहाणियुनि में मुख्य तत्वु आहे। केतिरियूं सिंधी कहाणियूं अक्सर शिकार जे बयान सां शुरु थियनि थियूं।

माण्हुनि, जानवरनि ऐं ब॒ियुनि शयुनि जूं सूरतूं बदलाइण वारो आग॒ाटो ख़याल बि केतिरियुनि लोक कहाणियुनि जे तर जो मुख्य ऐं अहम तत्वु आहे। मरण बाद ब॒ीअ जूणि में अचणु हिंदू अक़ीदे जो जुजो आहे, जंहिं लाइ 84 लख जूणियूं चयूं वञनि थियूं। जूणि मटाइण वारो खयालु लोक कहाणियुनि में सूरतूं बदलाइण जी ग॒ाल्हि जी ताईद करे थो। यानी त

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

केतिरियूं सिंधी लोक कहाणियूं 'जूणि' वारे विश्वास ते बधल आहिनि। लोक कहाणियुनि में गाल्हि मां गाल्हि निकिरण जो नुक़्तो पिणि नजर अचे थो। 'अलिफ़ लैला' इन फ़न ते जुड़ियल आहे।

(iv) संगीत में वाद्य ऐं नृत्य सां मन जी भावनाउंनि खे प्रकट करण जो सुठो माध्यम थींदो आहे। लोकवाद्य लोकसंगीत जन–जीवन जे उल्लास ऐं उनकी भावनाउनि जो प्रतीक थींदो आहे। लोकगीत मानव हृदय जा सरल भाव आहिनि। जहिं खे हू शब्दनि ऐं स्वरनि जे माध्यम सां व्यक्त कंदा आहिनि। संगीत में लय जी प्रमुखता थींदी आहे, जहिंजे लाए वाद्य जी आवश्यकता हुई, फलस्वरूप लोक गीतनि में वाद्यनि जो प्रयोग शुरू थियो।

पौराणिक गाथाओं में भी असां वाद्यनि खे कहिं न कहिं रूप में पाईंदा आहिंयूं, जींअ–शिव जो डमरू, कृष्ण जी बंसी, विष्णु जो शंख वगैरह। लोक जीवन में आनन्द ऐं उत्साह वधाइण में वाद्यनि जो सदैव ही प्रयोग थींदों आयो आहे। नृत्य ऐं गीत ॿई वाद्यनि ते ई

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

आधारित थींदा आहिनि। आखिरकार लोकजीवन में इन कलाउंनि खे सुरक्षित रखण में वाद्यनि हर उचित सहायता ड॒िनी आहे। विभिन्न लोकवाद्य असांजे जीवन जे साधन ऐं भक्ति पक्ष खे सदैव ब॒ल ड॒िनो आहे। लोकसंगीत ऐं लोकवाद्य विभिन्न प्रकार सां रचिया ऐं ग॒ाए वेंदा आहिनि। मंगल गीत, प्रेम गीत, शृंगार गीत, विरह गीत, ऋतु गीत, त्योहार गीत, फाग॒ गीत, बसंत गीत, पावस गीत, संस्कार गीत, जन्म गीत, मुंडन गीत, पर्व गीत, वगैरह। इननि जों महत्व हमेशा कायम रहंदो आहे।

(v) स्वामी ग्वालानंद महाराज सिन्ध जे प्रसिद्ध संत ऐं प्रेम प्रकाश मंडल जे संस्थापक स्वामी टेऊँराम महाराज जो नंढो भाउ हो. संदसि जन्मु आखाड़ जे पूर्णिमा सन् 1897 ई. में सिन्ध हैदराबाद जे खंडू ग॒ोठ में श्री चेलाराम आसनदास जे घर थियो. स्वामी ग्वालानंद, स्वामी टेऊँराम महाराज खां गुर मंत्र वठी साधना कंदो रहियो. संदसि गले में सरस्वती जो वासो हो. भग॒वत प्रेम जो भज॒न ग॒ाईंदो हो. ग॒ाईंदे ग॒ाईंदे भग॒वत भज॒न में

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

तलीन थी वेंदो हो. संदसि मन में वैराग॒ वृत्ति वधी वई. माता कृष्णा देवीअ हिन खे मङणे लाइ ज़ोर भरियो. पर हिन माता खे सफ़ा इन्कार कयो. जंहिं खे राम रसु आयो उहो दुनेवी रसनि भोग॒नि खे छा कंदो ! श्री ग्वालानंद समूरो समय स्वामी टेऊँराम महाराज जे संग में गुज़ारींदो हो, उन्हनि जी सेवा ऐं स्मरण में स्वास सफल कंदो हो. हू स्वामी टेऊँराम महाराज सां गडु॒ सिन्ध जे जुदा-जुदा शहरनि ऐं गो॒ठनि में नाम जो प्रचार करण वेंदो हो. हिन वेदांत ऐं योग साधना जो अभ्यास कयो. स्वामी ग्वालानंद महाराज न सिर्फ़ सिन्ध में पर भारत जे भिन्नि-भिन्नि नगरनि में वञी वेदांत ऐं आत्म-ज्ञान जो संदेश डि॒नो. संदसि पेशानीअ में अध्यात्मिक तजलो हूंदो हो. गुरु महाराज जी कृपा सां स्वामी ग्वालानंद हैदराबाद ऐं कराचीअ में आश्रम जी स्थापना कई.

6. निम्नलिखित में से किसी **एक** अनुच्छेद का सिंधी में अनुवाद कीजिए : 1×10=10

(i) जीव कई योनियों में जन्म लेकर विषय भोगता रहा है; इंद्रियों के रस-भोग तो पतंगों-परिंदों, पशु-पक्षियों के

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

कितने ही जन्मों में भोगे हैं। पवित्र मनुष्य देह उसके लिए प्राप्त नहीं हुई है। मनुष्य देह मिलने पर भी वह खाने–पीने, पहनने–ओढ़ने, मौज–मस्ती, सन्तान उत्पन्न करने और उसके पालन–पोषण में गँवा दी गई तो वह मूर्खता नहीं तो और क्या है ? वह तो हुआ हीरों को कंचों जैसे गँवाना।

एक हीरों का व्यापारी धन कमाने परदेस गया। रास्ते में रात हो गई। दूसरे दिन सुबह उठा। दातुन के लिए एक पेड़ देखा जो वास्तव में भाँग का था परंतु वह उसे नीम का पेड़ समझ, एक टहनी का टुकड़ा तोड़ दातुन करने लगा। उसका रस अंदर गया और नशा चढ़ गया। उस नशे के कारण व्यापारी उछलने–कूदने लगा। पास वाले शहर में पहुँचा तो बच्चों ने जब देखा कि वह पागलों जैसे उछल–कूद कर रहा है तो उसे चिढ़ाते हुए पीछे पड़ गए। वह एक खाली मकान में घुस गया और उसने दरवाजा बंद कर दिया। उस मकान की दीवार में एक बड़ा सुराख था। बच्चे उसमें से कंकड़ मारने लगे तो व्यापारी उन्हें बदले में अपने साथ लाए हीरे–मोती मारने लगा। बच्चों को हीरे–मोती मिलने लगे तो और उत्साह से कंकड़ मारने लगे। आखिर व्यापारी द्वारा साथ लाए

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

हीरे समाप्त हो गए तो उसका नशा भी टूटा। तब होश आया कि यह मैंने क्या किया ? बाहर आकर देखा तो बच्चे तो हीरे–मोती लेकर चले गए थे। अब वह पछताने लगा, परन्तु पीछे पछताए क्या होता है, जब चिड़िया चुग गई खेत ?

(ii) कुछ लोगों का मानना है कि भूल से कोई कर्म करने के कारण बुरा फल मिलता है, परंतु हर स्थिति में ऐसा नहीं होता। पूरी तरह सोच–समझ कर पुरुषार्थ करने और उचित मार्ग अपनाने के बाद भी कितने ही लोगों को उनका विपरीत अर्थात् बुरा फल प्राप्त होता है। वह क्यों ? वह सब प्रारब्ध कर्म के कारण होता है। जिसे आप ईश्वरी इच्छा कहते हैं, वह प्रारब्ध ही है। प्रारब्ध और कुछ नहीं है, परंतु अपने पूर्व जन्मों के कर्मों का संग्रहीत फल है। परमात्मा न तो किसी को विशेष या अच्छा फल देता है और न तो बुरा, परंतु हमने जो बोया है वही फ़सल काटते हैं। पूर्व पुरुषार्थ का फल भोगते हैं और जो अधिक पुरुषार्थ करते हैं वह भविष्य बनाने हेतु होता है। भगवान अवश्य कहता है कि जैसा जिसका कर्म, वैसा ही फल उसे मिलेगा। इसका अर्थ यह न समझें कि जो

Downloaded from www.IGNOUBABA.com

कुछ हमने वर्तमान में किया है उसका फल अभी ही मिले। हो सकता है इस जन्म में मिले अथवा अगले किन्हीं जन्मों में। ऐसा भी हो सकता है कि इस जन्म में बहुत ही अच्छे पुरुषार्थ के कारण पूर्व जन्मों के पाप कर्मों का फल कम प्रभावी हो और दूसरी ओर अत्यंत बुरे कर्म करने के कारण पूर्व के शुभ कर्मों का अच्छा फल भी कम सुखदायी प्रतीत हो।

× × × × ×

Downloaded from www.IGNOUBABA.com